thearyasamaj.org

ऋग्वेद

यजुर्वेद

वर्ष-११ अंक-८
२७ अप्रैल २०१५

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति- २०-०० रु.

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

सामवेद

अथर्ववेद

thearyasamaj.org

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक-रवि

मासिक

वर्ष-११ अंक-०८

२७ अप्रैल २०१५

(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११६

विक्रम संवत् २०७२

दयानन्दाब्द १९०

सलाहकार मण्डल

राजेन्द्र व्यास

पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री इन्द्रप्रकाश गांधी

कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक

प्रकाश आर्य

फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक

मुकेश कुमार यादव

फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता

एक प्रति- २०-०० रू.

वार्षिक-२००-०० रू.

आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र. विषय	पृष्ठ
संपादकीय	4
पाप से दूर हों	7
भारत का अभिनव रचनात्मक अभियान	8
आजादी की बुनियाद	9
नारियों के अधिकार व कर्तव्य	11
होश में आओ तो सही	13
महर्षि दयानन्द ग्रंथ परिचय	15
धर्म को क्यों माने	18
महर्षि का कलकत्ता प्रवास	21
उज्जैन संभाग में कार्यशाला सम्पन्न	23
आर्य समाजों में पुरोहितों की नियुक्ति	25
देश द्रोह सहन नहीं होगा	26

मई माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

6	पं. मोतीलाल नेहरू जयंती
7	गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जयंती
8	विश्व रेडक्रास दिवस
15	रामभक्त केवट जयंती
17	रानी अहिल्याबाई होल्कर जयंती
21	महाराणा प्रताप एवं छत्रसाल जयंती, राजीव गांधी पुण्य तिथि
27	पं. जवाहरलाल नेहरू पुण्य तिथि
28	वीर सावरकर जयंती
31	विश्व तम्बाखू निरोध दिवस

thearyasamaj.org

सम्पादकीय –

अशान्ति की राह में शान्ति की खोज

सम्पूर्ण विश्व आज अशान्त है, अशान्ति के कारण अलग अलग हो सकते है। मानवीय मानसिक अशान्ति तो है ही अब तो प्रकृति भी अशान्त लगती है।

बाढ़, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सुनामी, भू स्खलन इन सबसे अशान्ति फैल रही है। विश्व के किसी भी भाग पर चले जावें अशान्ति का साम्राज्य छाया हुआ है। प्रश्न उठता है क्या परमात्मा ने इस सुन्दर सी सृष्टि की और सर्वोत्तम मानव चोले की रचना अशान्ति के लिए ही की थी ? क्या यही मुख्य ध्येय रहा था ?

जिधर देखों जहां देखो, जिसे देखो, मानव अशान्त दिखाई दे रहा है। यदि विचार करें तो जानेगे सुखों (शारीरिक व आत्मिक सुखों) में शान्ति है, और दुखों में अशान्ति है। अशान्ति के तीन प्रकार बताए पहला प्रकृति जन्य दैवी प्रकोप जिन्हे आदि दैविक कहते है दूसरे अन्यो के द्वारा पहुचांए क्लेश जिसे आदि भौतिक कहते हैं तीसरा प्रकार के जो हमारे अपनी अज्ञानता के कारण उत्पन्न होते हैं जिन्हे आध्यात्मिक कहते है।

अशान्ति के मुख्य कारणों के मूल में मानवीय अज्ञानता ही मुख्य कारण है। इस अशान्ति को नियन्त्रित किया जा सकता है यह असभंव नहीं है किन्तु उसके लिए पूर्ण पुरूषार्थ और उसके निदान का सत्यज्ञान आवश्यक है।

अशान्ति से छुटकारा पाने का प्रयास भी जारी है किन्तु वह ऊपरी तौर पर औपचारिकताओं में, वाणी तक, अथवा अज्ञानता के द्वारा उचित अनुचित का ध्यान रखे बिना किया जा रहा है। किसी भी सुखद परिणाम तक पहुंचने के लिए सर्वप्रथम उस लाभकारी लक्ष्य का निश्चय फिर उसे प्राप्त करने का सही ज्ञान, और उसके लिए व पूर्ण पुरूषार्थ करना आवश्यक है। इन तीनों ही बातों का होना आवश्यक है।

मानव जीवन में शान्ति स्थापित करना एक श्रेष्ठ लक्ष्य है इसमे कोई सन्देह नहीं। इसीलिए शान्ति के लिए न केवल पृथ्वी पर शान्ति की, अपितु समस्त ब्रह्माण्ड में जल थल नभ में इस शान्ति की प्रार्थना की जाती है।

मन या प्राकृतिक साधनों में जब जब विकार का वेग बढ़ता है तब तब कष्ट बढ़ता है विनाश होता है, अशान्ति होतीं है। भूकम्प, सुनामी, और मानसिक विकार सामान्य स्थिति से नहीं असामान्य अशान्ति की स्थिति में ही होते है।

शान्ति का लक्ष्य सर्व हिताय है, सर्वकालिन है, बहुत अच्छा है। अशान्त समाज आज शान्ति चाहता है किन्तु गंभीरता से उसने इसे अपना लक्ष्य नहीं बनाया। शान्ति की अपेक्षा भौतिक सुखों में वह अधिक विश्वास रखता है। इसलिए शान्ति के भाव को त्याग कर भौतिक सुख सम्पन्नता के मार्ग पर अति तीव्र गति से बढ़ता जा रहा है।

thearyasamaj.org

आज के समाज की दिनचर्या व व्यवहार शान्ति का नहीं सम्पत्ती का उपासक है। इसलिए शान्ति का लक्ष्य एक टिमटिमाते बिना तेल के सूखी बाती के जलते हुए दीपक के समान है जिससे निश्चितता, निरन्तरता और विशेष लाभ की कल्पना नहीं की जा सकती। इसका एक मात्र कारण लक्ष्य के प्रति पूर्ण मानसिकता का अभाव है।

दूसरा यह भी एक कारण है कि शान्ति को पाने का पूर्ण ज्ञान नहीं, अशान्ति क्यों है इसका भी अनुमान नहीं। जिस प्रकार शारिरिक बिमारी होने पर उसके कारणों का पता किया जाता है जानकारी होने पर शरीर को किस प्रकार के तत्व की आवश्यकता है दवा से उसकी पूर्ती की जाती है और रोग का निवारण हो जाता है। यदि सही ज्ञान के अभाव में आवश्यकतानुसार औषधि नहीं दी गई तो रोग घटने के स्थान पर बढ़ सकता है आगे परिणाम गंभीर हो सकते हैं। उसी प्रकार अशान्ति होने के कारण जानना आवश्यक है।

हमारे सामने शान्ति स्थापित करने के कई मार्ग तथाकथित धार्मिक उपायों में बताए जिनमें कर्म की प्रधानता नहीं है। मानव चाहे तो सबकुछ प्राप्त हो सकता है किन्तु आज बिना कर्म किए सबकुछ प्राप्त कराने की अनेक झूठी दुकानें अशान्त समाज को शान्ति देने हेतु चल रही है। समाचार पत्रों में टी.वी. पर एक दो नहीं सैकड़ो झूठे लुभावने तरह तरह के तरीको का प्रचार हो रहा है मनुष्य को अकर्मण्य बनाकर भाग्यवादी बनाया जा रहा है।

शान्ति और अशान्ति का सम्बन्ध शारिरिक, मानसिक, व प्राकृतिक कारणों के साथ जुड़ा हुआ है। इनमें से किस कारण से स्थिति अशान्त है उस कारण का निदान होना चाहिए। किन्तु आज तो मन की शान्ती, गृह की शान्ति और तो किसी मृतक परिजन की शान्ती कुछ भेट, पूजा, स्नान, कथा, यज्ञ, अंगूठी, लाकेट, गुरू के आशीर्वाद से और वास्तूशास्त्र के अनुसार बनाने या पुराने को तोड़ कर मकान वास्तु के अनुसार बनाने से की जा रही है। **"मरता क्या न करता"** वाली स्थिति में आज समाज की है। अशान्ति से छुटकारा पाने के लिए जो जैसा कहे वह वैसा करने को तैयार हो जाता है।

बिना सोचे समझे जो जो नहीं करना चाहिए वह भी करता है जो करना चहिए उसको भी त्याग देता है। ऐसे बिना सोचे समझे किए गए कार्य कोई लाभ नहीं पहुंचाते और समय, सम्पत्ती स्वास्थ की क्षति ही होती है ऐसे कार्यो को ही तामसी (निकृष्ट) कर्म कहा गया। योगीराज श्री कृष्ण के अनुसार –

अनुबधं क्षयं हिंसा मनवेक्ष्य च पौरूषम्।
मोहादरभ्यते कर्म यत् तत्तामसी मुच्यते।।

अर्थात परिणामों को जाने बिना नुकसान को हिंसा से युक्त कर्म को अनदेखा कर प्रारंभ किया कर्म तामसी कर्म कहलाते है।

thearyasamaj.org

विपत्तियों से घिरने पर भी यदि मानसिक सन्तुलन है तो विपरीत परिस्थितियों में भी हमें अशान्त होने से बचा लेता है बहुत कुछ हद तक अशान्ती से बचा जा सकता है। परमात्मा का सानिध्य अशान्ति को नष्ट करने का सबसे बड़ा उपाय है

ईश्वर सबसे बड़ा सहयोगी मित्र और शान्ती दाता है वेद के मन्त्र में इसका कुछ ऐसे वर्णन है –

ओ३म् शन्नोमित्रः शंवरूणः शन्नो भवत्वर्यमा।
शन्नऽइन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णु रूरूक्रमः।।

कहां गया – शान्ती स्वरूप मित्र (परमात्मा) हमें श्रेष्ठ मित्र (वरूण) के रूप में, सामर्थ्यवान के रूप में शान्ति प्रदान करे, निरपेक्ष प्रभू हमें शान्ति दे, वेद ज्ञान का स्वामी हमें शान्ती दे, व्यापक प्रभु हमें शान्ति दे, महान पराक्रम वाला प्रभू हमें शान्ती दे।

अशान्त अर्जुन ने अपनी अशान्ती के निवारण का मार्ग योगीराज से पूछा तो श्री कृष्ण जी ने कहा – **तमेव शरणं गच्छ सर्व भावेन भारत।**
तत्प्रसादात्परां शान्ती स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।। गीता

यहां अर्जुन को शाश्वत शान्ति के लिए उस परमात्मा की शरण में जाने का ही उपदेश किया है। शान्ती का मार्ग हमारे अपने कर्म सदाचारी व्यवहार पर निर्भर करता है। सदाचार में स्वंय सुखी रहने और दूसरों को सुखी रखने का भाव निहीत है। अपने सुख के लिए अपनी शान्ति के लिए दूसरों की सुख शान्ति छीनकर सच्ची शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती।

आज मानव समाज व्यक्तिगत जीवन से लेकर राष्ट्र तक शान्ति तो चाह रहा है किन्तु शान्ति चाहता है अपने को अधिक शक्तिशाली बनाकर दूसरों पर अधिकार करके, शान्ती चाहता है अपने थोड़े से लाभ के लिए दूसरों को बड़ी से बडी हानि पहुंचाकर। अपने अधिकारों की सीमा बढ़ाकर और किसी के अधिकारों की सीमा घटाकर शान्ति प्राप्त करना चाहते हैं। किन्तु यह विचार धारा ये कर्म शन्ति का नहीं अशान्ति का मार्ग है। इससे मानव, मानव में कटुता, घृणा, हिन्सा की वृद्धि होगी, जो अशान्ति को जन्म देती है।

सच्ची शान्ती का आधार धर्मयुक्त आचरण है जिसमें अपने मानवीय कर्तव्यों का दृढ़ता से पालन करने का संदेश है, सर्वे भवन्तु सुखिनः का पवित्र ध्येय है। आज समाज धर्म नहीं कुछ मानवीय विचारधाराओं का अनुसरण कर उसे जबरन दूसरो पर थोपने में लगा है। धर्म त्याग कर साम्प्रदायिक विचारों को शान्ती का मार्ग मान रहा है। यह नितान्त अज्ञानता और अशान्ति का कारण है। जब तक यह भ्रम नहीं हटेगा तब तक शान्ती की बाधा समाप्त नहीं होगी।

जमाने का दस्तूर अजब निराला है
आग बुझाने को, तेल उसमें डाला है
सुकुन की राह छोड़ कर भटक रहे हैं ।
फिर भी मंजिल पाने को तड़फ रहे है।
जो थी राह मंजिल की उससे रूख मोड़ लिया।
मंजिल की चाह ने झूठी तसल्ली से जोड़ दिया।।

thearyasamaj.org

वेद वाणी

पाप से दूर हों

ओ३म् परोपे हि मनस्पाप किसशस्तानि शंससि।

परेहि न त्वा कामये वृक्षां वनानि संचर गृहेषु गोषु में मनः।। अर्थवेद

हे (मनस्पाप) मन के पाप तू (परा उप एहि) दूर भाग जा हे पापी मन। (किम्) क्यो (अशस्तानि) निन्दित बातों को (शंससि) सोचता है। (परेहि) हट जा। हे मन के पाप (त्वा) तुझको (न कामये) मै नहीं चाहता। (वृक्षान्+वनानि) वृक्षों और वनों में अर्थात निर्जन स्थानों में (संचर) विचरो (में) मेरा (मनः) मन तो (गृहेषुं) मेरे शरीर रूप घर की सफाई में विकारों से दूर करने में (गोषु) इन्द्रियों को सही दिशा की ओर उन्मुख करने में तथा वेद पठन पाठन में गौ संरक्षक व गौ संवर्द्धन में लगा है।

भावार्थ – मन मानव जीवन का आधार है, योगीराज श्रीकृष्ण कहते हैं – **"मन एव मनुस्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो"** मन ही मनुष्य के बन्धन का कारण है, मन ही मनुष्य के लिए मोक्ष का कारण है। मन का कपि बन्दर कहा गया है बहुत उछल कूद मचाता है मन के संकल्प विकल्प होते रहते है – इसमें उलझकर मनुष्य आकुल व्याकुल हो जाता है मन के विकार काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, मत्सर, के वशीभूत होकर मनुष्य शनैः शनैः पतन के गर्त में जाने लगता है मन एक सीढी है जिससे ऊपर भी जा सकते है और उपर से नीचे भी आ सकते है। किन्तु साधना में रत साधक मन के पापों को कठोर शब्दों में कहता है।

मेरा तुझसे अब कोई सम्बन्ध नहीं है मैं तुझे नहीं चाहता। मैं अब समझ गया हूं – ये मन के विकार नरक के पथ है। मै तो अब दृढ संकल्प के साथ प्रभू का स्मरण करते हुए संयम विवेक की पतवारों से जीवन नौका खे रहा हॅू – योगासन प्राणायमादि से जीवन को प्रेय मार्ग से श्रेय मार्ग की ओर ले जा रहा हॅू। मै तो अपने शरीर की अर्न्तमन की सफाई में लगा हुआ हॅू। मै गौ अर्थात इन्द्रियों को सात्वीक और बलशाली बना रहा हॅू – वेदवाणी का जीवन में पठन पाठन और उसे जीवन में उतार रहा हॅू। गौ सर्वर्द्धन और गौ संरक्षण में जीवन आर्पित किए हुए हॅू। मन से बुरे विचारों को दूर कर रहा हॅू। हे मन के पाप भाग जा दूर हो जा। इस प्रकार की दृढ़ता आने से मन के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति हो और बन्धनों से मुक्ति हो सकती है।

श्री राजेन्द्र व्यास
उज्जैन

"वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम्" वेद
मातृभूमि के लिए मैं बलिदानी बनूं।
– आर्य समाज

thearyasamaj.org

स्वच्छता अभियान

भारत का अभिनव रचनात्मक अभियान

यशस्वी प्रधान मंत्री जी श्रद्धेय नरेन्द्र मोदीजी ने स्वच्छता अभिमान को भारत विकास योजनान्तर्गत महत्वपूर्ण स्थान देकर भारत के जन मानस को आदर्श नागरिक के रूप में प्रतिस्थापित करते हुए स्वच्छता जागरण का जो प्रशंसनीय पौरूषार्थिक सार्थक प्रयास किया है ऐसे पुनीत राष्ट्रीय कार्य के लिए आदरणीय मोदीजी बधाई के पात्र है।

बच्चों से लेकर हर उम्र के स्त्री पुरूषों में ग्रामीण अंचल से लेकर नगरीय क्षेत्रों तक इस इस अभियान के प्रति रूझान व समर्पण दिखाई दे रहा है – वह स्तुत्य है। स्वच्छता के दो रूप है – बाह्य रूप में स्वच्छता और आन्तरिक रूप में अर्न्तमन में स्वच्छता अर्थात मन में समाए हुए बुरे विचारों की सफाई ! अर्न्तमन की सफाई देश की तकदीर व तस्वीर बदल सकती है ऐसा हमारा विश्वास है।

आइए इस प्रसंग में – वैदिक दृष्टि, वैदिक चिन्तन क्या है ? कुछ थोडा सा सहजभाव से गम्भीरतापूर्वक सोचे विचारे ! वर्तमान स्थिति है **"बाह्य चेतना जागृत जग में अर्न्तमन निदित"** मन की स्वच्छता – बुरे विचारों को मन से दूर करें"

इसलिए ब्रह्म यज्ञ करते समय बाहरी व आन्तरिक शुद्धि की प्रार्थना परमात्मा से करते हैं।

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका का सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। समयावधि पूर्ण होने पर अपनी सहयोग राशि कृपया भेजें।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

thearyasamaj.org

आजादी की बुनियाद

महर्षि दयानंद का प्रादुर्भाव और देश की आजादी का शंखनाद तथा 1857 की कांति

द्वापुर के अंत में वेदों के महा विद्वान वेद व्यास हुए थे। उनके पश्चात साड़े पांच हजार वर्ष के लम्बे अंतराल के बाद भारत माता के धरातल पर गुजरात प्रदेश में वेद ज्ञान का सूर्य महर्षि दयानंद के रूप में उदय हुआ। भारत माता की पराधीनता की जंजीरों को तोड़ने के लिए और अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाने के लिए ही महर्षि दयानंद के रूप में एक महान दैदीप्य मान प्रतिभा का प्रादुर्भाव हुआ।

विद्वानों ने लिखा है कि कैसे थे महर्षिदयानंद वैदिक संस्कृति के पुनरूद्धार करने वाले विलुप्त वैदिक प्रणाली को पुनर्जीवित करने वाले, वेद विद्या मतोण्ड़ योग समाधिजन्य ऋतम्भरा प्रज्ञा के धनी आदित्य ब्रह्मचारी, ब्रह्मनिष्ठ, परिब्राट, प्रकाण्ड़ दार्शनिक, भारतीय नव जागरण के पुरोधा, धर्म संशोधक, सत्य के अद्वितीय पुजारी, धार्मिक तथा सामाजिक कुरीतियों के विध्वंसक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक चिन्तक, युगदृष्टा, पीड़ित कराहती मानवता को अभय प्रदान करने वाले, स्वराज्य, स्वदेशी, स्वभाषा, स्वसंस्कृति को प्रतिष्ठित करने वाले महान राष्ट्रभक्त भारत के गौरवशाली अतीत को प्रगट करने वाले स्वाभिमानी भारत माता के सच्चे लाड़ले सपूत, आर्य समाज के संस्थापक, दया के सागर, महान ईश्वर भक्त, विष पीकर भी अमृत प्रदान करने वाले करूणा के सागर थे।

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कहा था कि भारत की स्वधीनता की नींव रखनेवाला वास्तव में स्वामी दयानन्द ही था। स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने अपनी पुस्तक बागी दयानन्द में लिखा है कि स्वराष्ट्र, स्वभाषा, स्वसंस्कृति, स्वतन्त्रता के प्रबलतम पक्षधर महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे दिव्य राष्ट्र पुरूष थे जिनका सम्पूर्ण चिन्तन और कार्य जहां आध्यात्मिकता से ओतप्रोत था वहीं राष्ट्र उनके लिए प्रथम था। व्यक्ति की सर्वांगीण उन्नति स्व से ही प्रारंभ होती है। किसी भी क्षेत्र की पराधीनता व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिये अधोगति का कारण बनती है। पराधीन व्यक्ति चाहकर भी कुछ नहीं कर पाता है। यह तथ्य स्पष्ट है कि भारतवर्ष की स्वाधीनता के लिए एकदम साफ और बुलन्द शब्दों में आवाज उठाने वाले व्यक्ति महर्षि दयानन्द ही थे।

आततायी विदेशी विधर्मियों के अत्याचारों से और सैकड़ों वर्ष की गुलामी में जकड़ी भारत माता जर–जर होकर कराह रही थी। स्वामी दयानन्द जी ने भारत माता का दुखड़ा स्वयं अपनी ऑखों से देखा था। एक दिन स्वामी जी गंगा किनारे स्नान करने संध्यादि से निवृत्त होकर देखते हैं कि एक गरीब महिला अपने मृतक शिशु को अपनी साड़ी के टुकड़े में लपेट कर लाई और उसे गंगा में बहा कर उस कफन के टुकड़े को वह धोकर वापिस ले गई। यह दृश्य देखकर स्वामी जी की ऑखों में आंसू आ गये। इस प्रकार के गरीबी के दृश्य उन्होंने जगह–जगह देखें। देश की दशा पर वह रोपड़ते थे कि हाय मेरा देश इतना जर–जर तथा गरीब हो

thearyasamaj.org

गया है कि कफन को भी कपड़ा नहीं है। उनको अपनी अन्तर आत्मा में देश की दशा देखकर अत्यन्त वेदना होती थी। हजार वर्ष से विदेशी आतताई लुटेरे हमारे देश को लूट–लूट कर ले जाते रहे और अन्त में देश को गुलाम बनाकर अत्याचार करते रहे। विदेशी विधर्मियों से देश कैसे मुक्त हो सकेगा यही चिन्तन दिनरात उनके मन में रहता था। भारत माता को गुलामी से मुक्त कराने के लिये उनकी अन्तर आत्मा तड़फने लगी।

उन्हीं दिनों अपने भ्रमण तथा वैदिक धर्म प्रचार–प्रसार के दौरान आपकी कुछ देश भक्त वीरों से भेंट हुई। कुंवर जोरावर सिंह नानाजीराव पेशवा, तात्याटोपे आदि कुछ देश भक्तों से मातृभूमि को मुक्त कराने बाबद् आपकी विस्तृत रूप से चर्चा एवं मन्त्रणा हुई। स्वामी दयानन्द देश भक्त लोगों के हृदय में देश भक्ति की भावना कूट–कूट कर भरने लगे, और गुप्त रूप से देश स्वतन्त्र कराने के लिये योजनाएं भी बनाने लगे। उसी दौरान सन् 1855 में हरिद्वार के महाकुंभ मेले में गंगा किनारे सप्त सरोबर पर आपने पाखण्ड खण्डनी नाम से एक ध्वजा पताका फहराई और पाखण्ड के विरूद्ध लड़ने के लिये देश वासियों को आव्हान किया। जिससे कि देश चट्टान की तरह मजबूत बन सके।

जातिपाति–छुआछूत–स्त्री उत्पीड़न–अंधविश्वास–पोंगापंथी–साम्प्रदायवाद जैसी बुराईयों पर जहां आपने जमकर वार किया और झूठे पाखण्डों का खण्डन किया। वहीं एक ईश्वर वाद का आपने समर्थन किया। स्वामीजी ने देशहित में कुछ सकारात्मक बिन्दुओं को छुआऔर बुनियादी सुधार का शंख फूंका। देश में हो रही गौहत्या का आपने घोर विरोध किया। उपर्युक्त असत्य बातों का जहां आपने खण्डन किया वहीं सत्य सनातन वैदिक सिद्धान्त का कर्मनुसार वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था एक ईश्वर वाद तथा सर्व व्यापक निराकार परमात्मा को ओ३म् नाम से उपासना करने तथा मानने का मण्डन भी किया। इन तमाम सारी बातों पर पौराणिक पण्डितों से आपका शास्त्रार्थ हुआ और कई बार उन्हें परास्त किया। स्वामीजी ने अपने व्याख्यान में एक माह तक बराबर वैदिक धर्म और देश भक्ति की भावना लाखों लोगों के मन मस्तिष्क में कूट–कूट कर भरी और अपने अमृत मय प्रवचनों से जनता में उत्साह जगाया।

उसी अवसर पर झॉसी की महारानी लक्ष्मीबाई भी स्वामी जी के आश्रम पर पहुंचकर प्रवचन सुनती रहीं और देश तथा अपने राज्य के संबंध में विचार विमर्श करती रहीं थी। कुंभ के अवसर पर एक वृद्ध सन्यासी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से महर्षि दयानन्द ने भेंट की और उनसे देश की स्थिति पर विचार विमर्श किया। यही सन्यासी गुरूवर विरजानन्द के गुरू थे। उनके मन में भी देश की पराधीनता की टीस थी। इस बारे में उनसे स्वामी की गहन चर्चा हुई थी। वेदों के विस्तृत ज्ञान के बारे में उन्होंने कहा कि मेरे शिष्य विरजानन्द मथुरा में पढ़ाते हैं उनसे जाकर संस्कृत व्याकरण पढ़ो। कुंभ का मेला समाप्त होने पर आप पुनः धर्म प्रचार–प्रसार के लिये सारे देश में भ्रमण करने लगे।

– **सीताराम आर्य**, विदिशा

thearyasamaj.org

नारियों के अधिकार व कर्तव्य

यत ते नाम सुहवं सुप्रणीतेनुमते अनुमतं सुदानु।
तेना नो यज्ञं पिपहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम्।।

इस मन्त्र में पत्नी को अनुमति शब्द से सम्बोधित किया है। अनुमति से अच्छा नाम शायद सुमति हो सकता है पर नहीं वेद कहता है तु दुनियॉ के लिए सुमति हो सकती है पर मेरे लिये तु अनुमति ही है। सुमति का अर्थ होता है। अच्छी मति, अच्छी बुद्धि। सुमति से मनुष्य चाहे तो धन कमा सकता है, विद्या प्राप्त कर सकता है, यश प्राप्त कर सकता है और बहुत कुछ कर सकता है। कहा गया है – **"बुद्धिर्यस्य बलमतस्य"**। जिसके पास बुद्धि है अर्थात जिसके पास सबकुछ करने का सामर्थ्य है। नेपोलियन बोनापर्ट कहा करते थे "मेरे ज़ीवन से असंभव शब्द निकाल दो, संसार में कुछ भी ऐसा नहीं जो मैं न कर सकूं। क्यों ? क्योंकि मेरे पास मनन करने वाली मति है, बुद्धि है और वह भी सुमति हो तो कहना ही क्या।

पर पति कहता है, अपनी पत्नि से नहीं तू संसार के लिए सुमति हो सकती है। पर मेरे लिए, मेरे परिवार के लिए तो तू अनुमति ही है। अनुमति का अर्थ है अनुकूल मति और सुमति। दोनों शब्दों में केवल उपसर्ग का भेद है, पर अर्थ की गंभीरता ध्यान देने योग्य है। पारीवारिक सामांजस्य, पारीवारिक सौहार्द, संगठन का आज अभाव हो रहा है। संयुक्त परिवार आज बिखरते जा रहे हैं, नष्ट होते जा रहे हैं। इन सबका मूल कारण कौन है ? विचार करें तो नारी ही है, क्योंकि पत्नि चाहे तो अपनी अनुमति अर्थात सबको अनुकूल बना लेने वाली मति से अथवा स्वयं सबके अनुकूल बन जाने वाली बुद्धि से पूरे परिवार को एकता के सूत्र में आबद्ध कर सकती है।

मन्त्र कहता है – **अनुमते यत् तेन नाम** – हे अनुमति जो तेरा नाम **सुहवं** सुख पूर्वक बुलाने योग्य है **अनुमन्तं** सबके द्वारा अनुमत है स्वीकृत है, **सुदानु** – सुखदायी है इसलिए तेरे नाम के साथ में एक विशेषण और जोड़ता हूं **सुप्रणीते** – तु सुन्दर प्रणय करने के योग्य है, प्रेम करने के योग्य है। तु प्रणयपूर्वक लायी गई सुप्रणीता है। प्रणय और परिणय में भी केवल उपसर्ग का ही भेद है। जब कन्या के अन्दर प्रणय जागेगा तभी उसे परिणय के बन्धन में बांधा जा सकता है। 1

आगे मन्त्र में कहा – अपनी उस अनुकूल बुद्धि, अनुकूल स्वभाव, अनुकूल प्रियाचरण से तु **नः यज्ञं** – हमारे इस गृहस्थ यज्ञ को **पिपृहि** – पूर्ण कर दे उसे अपनी पालन शक्ति से पूर्णता प्रदान कर दे (पृ पालनपूरणयोः)। क्योंकि सकल जगत का उत्पादक तो वह परमेश्वर है यह निश्चित ही है अतः हम तो केवल पालन ही कर सकते हैं।

अन्त में मन्त्र में एक और बहुत प्यारा सम्बोधन नारी के लिये दिया **विश्वारे**– तू विश्ववारा है। तु सबके द्वारा वरण करने योग्य है। अपनी ममता अपने स्नेह व प्यार से सबका आच्छादन करने वाली है। तू परिवार के छोटे बड़े सब जनों के दुःखों का, कष्टों का, समस्याओं का निवारण करने वाली है। अतः तेरा नाम

thearyasamaj.org

विश्वारा है। यसह सत्य है नारी जहां जिस भी क्षेत्र में होगी वहां दुःख, कष्ट, घरेलु छोटी–बड़ी समस्याएं तो रहेगी ही नहीं। अतः वह सबके द्वारा वरणीय है।

एक संबोधन अभी और शेष है मन्त्र में कहा **सुभगे!** सुभगा है। तेरा भग सुखदायी है, तू सौभाग्यवती है। इसलिए मैं प्रार्थना करता हूं कि तू **सुवीरं रविं** – अच्छे वीर पराक्रम से युक्त पुत्र रूप धन का हमारे लिये **धेहि** – धारण कर, और उसका पोषण भी कर क्योंकि उत्तम सन्तान देकर अच्छो पालन पोषण के द्वारा सुसन्तान प्राप्ति की तू ही आधार है। वैदिक नारी अपने इस कर्तव्य का बोध अच्छी प्रकार करती थी, वह घर की व्यवस्था में गृह के संयोजन में तथा सन्तान के निर्माण में अपने अधिकार और दायित्व को समझती थी। इसीलिए वेद के शब्दों में वह अधिकारपूर्वक कहती थी।

अहं वदामि नेत् त्वं सभायामह त्वं वद।
ममेदसस्त्वं केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन।।

– अथर्व 9/39/4

इस घर के **अहं वदामि** – मैं बोलती हूं, मैं बोलूंगी **नेत् त्वं** – तू नहीं ! कभी नहीं। हॉ सभा में बाहर सोसायटी में तू बोल तुझे जितना बोलना हो। साथ ही वेद के शब्दों में वह आगे सचेत करते हुए कहते हैं – तू बाहर जा रहा है जा! लेकिन ध्यान रखना तू केवल मेरा ही है। बाहर किसी ओर की पराई स्त्री का कीर्तन भी मत करना, नाम भी मत लेना। इस प्रकार नारी तो स्वयं पतिव्रता होती ही है, उसे होना भी चाहिये पर पुरूष को भी छूट नहीं है, यह मन्त्र ने स्पष्ट कर दिया। पुरूष को भी एक पत्नीव्रत बनकर ही रहना है। किसी दूसरी स्त्री का नाम भी नहीं लेना है।

मन्त्र में नारी को सुभंगा शब्द से सम्बोधित किया है और समाज में विवाहित नारी को सौभाग्यवती भवः अखण्ड सौभाग्यवती भव का आशीर्वाद दिया जाता है। इसीलिये पति के मर जाने पर सुहाग के सौभाग्य` विवाहिता के जो चिन्ह हैं बिन्दी, सिन्दूर और अन्य श्रृंगार आदि उनसे सदा के लिए उसे वंचित कर दिया जाता है। मानो पति ही उसका सौभाग्य था।

इस प्रकार नारी के लिये पत्नी के लिये प्रयुक्त अनुमति सुप्रणीति विश्ववारा और सुभगा ये विशेषण वेदों में नारी कर्तव्य व अधिकार के व्यापक हैं। यज्ञ को पूर्ण करना व उसका पालन करने का दायित्व नारी पर है। यदि पुरूष समाज अपने अतिरिक्त बल के प्रयोग से इस वेदाज्ञा का उल्लंघन कर नारी के अधिकारों पर प्रहार करेगा तो समाज में अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार के साथ दुर्भिक्ष अकालमृत्यु और भय से युक्त दुर्दिन ही उसका परिणाम होगा। यह सुनिश्चित है। क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है –

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्य पूजा व्यक्तिकमः।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम्।।

– आचार्या नन्दिता जी शास्त्री

thearyasamaj.org

होश में आओ तो सही

— कुं. सुखलाल आर्य मुसाफिर

तो निहालाने वतन होश में आओ तो सही,
आबरू कौम की जाती है, बचाओ तो सही।

जान मुर्दों में भी आजायेगी, मायूस न हो,
वेद अमृत का इन्हें जाम पिलाओ तो सही।।

राम और कृष्ण इसी खाक में पैदा होगें,
माता कौशल्या – यशोदा सी बनाओ तो सही।

खुद ही मिट जायेगें, भारत को मिटाने वाले,
तुम पर्दाये गफलत को उठाओ तो सही।।

अमर हो जाओगे दुनिया में हमेशा के लिए,
धर्म की राह में सर अपना कटाओ तो सही।

आन पर जान फिदा अपनी ''मुसाफिर'' कर दो,
बात कहने की नहीं करके दिखाओ तो सही।।

thearyasamaj.org

गीत

आज अगर खामोश रहे तो कल सन्नाटा छायेगा।
आग लगे जब हर बस्ती में याद दयानन्द आयेगा।।

सन्नाटे के पीछे से फिर आयेगी यहॉ एक सदा।
यहॉ नहीं कोई यहॉ नहीं कोई भी इस घर में है बचा।।
सजा, सजाया जहॉ धधकती लपटों में फंस जायेगा।।
आग लगे जब ....

कलियों की महक खिलते फूलों की झुलस जायेगी पंखुड़ियॉ
लगती है नजदीक पशुता के ताण्डव की अब घड़िया।
लड़ियां खुशी की टूटे अन्धेरा उजाले को कम धायेगी।।
आग लगे जब ....

वक्त की कीमत समझो निकल लाये मुट्ठी से
मखमल की तरह बस्ते नगर घर ग्राम उजड़
कभी बन जाये जंगल की तरह,
दुल्हन की तरह सजते रहे तो कल क्या इतिहास बतायेगा।।
आग लगे जब ....

आज सन्देश वेदों का उम्मींद की किरण दिखाता है,
वरना तो सामने ऑखों के ग्रहयुद्ध का लक्षण दिखाता है
निर्भीकता मिट जायेगी यहॉ आतंक ही छाता जायेगा।
आग लगे जब ....

भारत क्या पूरे ही विश्व के बचने का मार्ग है आज।
वैदिक सभ्यता संस्कृति का बिगुल बजाये आर्य समाज।।
राज समझ कर वेदों का कर्मठजन जन सुख पायेगा।
आग लगे जब ....

– **वृजपाल शर्मा कर्मठ**, मुजफ्फर नगर

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द ग्रंथ परिचय

चतुर्वेद विषय–सूची

प्रश्न 1 क्या महर्षि द्वारा लिखित वेद विषयक कोई अन्य ग्रंथ भी उपलब्ध है ?

उत्तर : हॉ, महर्षि द्वारा लिखित वेद विषयक एक ग्रंथ भी उपलब्ध है, जो छोटा (लघु) होते हुए भी बहुत उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 2 इस ग्रंथ का क्या नाम है ?

उत्तर : इस ग्रंथ का नाम है – चतुर्वेद विषय–सूची।

प्रश्न 3 परन्तु इसका नाम तो सुनने में नहीं आया ? (परन्तु यह ग्रंथ प्रसिद्ध तो नहीं है ?)

उत्तर : हॉ, यह ग्रंथ अधिक प्रसिद्ध न होते हुए भी बहुत उपयोगी है।

प्रश्न 4 इसकी क्या उपयोगिता है ?

उत्तर : जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट हो रहा है, इस ग्रंथ में चारों वेदों के सभी मन्त्रों के विषय अर्थात् देवता का उल्लेख किया गया है।

प्रश्न 5 सच में ही यह अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं उपयोगी ग्रंथ है। चारों वेदों के सभी मन्त्रों के देवता अथवा विषय का उल्लेख करना अपने आप में बहुत जटिल कार्य है, परन्तु इस ग्रंथ की प्रामाणिकता कहॉ तक सत्य है ?

उत्तर : जटिल एवं महत्वपूर्ण कार्य होते हुए भी यह ग्रंथ पूर्णतः प्रामाणिक है। क्योंकि इस ग्रंथ का मूल आलेख स्वयं महर्षि दयानन्द द्वारा संशोधित एवं परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा संरक्षित है। इसके प्रूफ का संशोधन आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान भवानीलाल जी भारतीय द्वारा ही किया गया है। सन् 1935 ई. में पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने नवम्बर–दिसम्बर के महीने में इस ग्रंथ की प्रतिलिपि की थी। उनके अनुसार, यह ग्रंथ सफेद फुलस्केप कागज पर लिखा हुआ है। इसमें 56 पृष्ठ हैं।

प्रश्न 6 इस ग्रंथ का रचना काल क्या है ?

उत्तर : प्रत्यक्ष प्रमाण न मिलने से इसका निश्चय करना कठिन है। हॉ, इतना अवश्य है कि इसकी रचना ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका की रचना से पूर्व हो चुकी थी।

प्रश्न 7 इसका प्रथम बार प्रकाशन कब और कहॉ से हुआ ?

उत्तर : इस ग्रंथ का प्रथम बार प्रकाशन सन् 1971 (विक्रमी संवत् 2028), दयानन्दाब्द 147 में अजमेर, वैदिक यन्त्रालय से ही हुआ था।

thearyasamaj.org

प्रश्न 8 क्या चारों वेदों के सभी मन्त्रों के विषयों की सूची एक साथ प्रस्तुत है अथवा पृथक–पृथक है ?

उत्तर : इस ग्रंथ में चारों वेदों के मन्त्रों के विषयों की सूची एक साथ नहीं, अपितु प्रत्येक वेद के मन्त्रों की सूची पृथक–पृथक प्रस्तुत की गई है। यथा – ऋग्वेद विषय सूची, यजुर्वेद विषय सूची, समावेद विषय सूची तथा अथर्ववेद विषय सूची। महर्षि ने एक स्थान पर ही वेदों के सभी मन्त्रों के विषय (देवता) को प्रस्तुत करके सचमुच एक महत्वपूर्ण एवं अमूल्य कार्य कर दिया। यह वेदों का अध्ययन एवं वेद के विभिन्न विषयों के अनुसन्धानकर्ताओं के लिए सुगम मार्ग निर्माण के समान ही उपयोगी है।

प्रश्न 9 इन चारों विषय सूची का क्रम क्या है ?

उत्तर : चतुर्वेद विषय सूची में क्रम है – ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद और यजुर्वेद विषय सूची। पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी के मत में, 'संभवतः यजुर्वेद के साथ कर्मकाण्ड की घनिष्ठता के कारण ऋषि ने इस पर सबसे अन्त में विचार किया हो। अथवा वे इसी क्रम से वेदों का भाष्य रचना चाहते हों।

वेदभाष्य के दो नमूने

प्रश्न 1 महर्षि के चारों वेदों का भाष्य करने की आवश्यकता क्यों महसूस हुई ?

उत्तर : महर्षि भली प्रकार जान गये थे कि भारत की धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक अवनति का मुख्य कारण वैदिक शिक्षा का लोप और पौराणिक शिक्षा का प्रसार है। वेद का वास्तविक स्वरूप महाभारत युद्ध के पश्चात विभिन्न मत–मतान्तरों की आंधी से सर्वथा ओझल हो गया है। (सत्यार्थ प्रकाश, 11 वें समुल्लास की अनुभूमिका) समस्त आर्ष ग्रंथों के अनुशीलन और अध्ययन से वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि नवीन भाष्यों (उब्बट, महीधर, सायण आदि द्वारा किये गये) के कारण ही वेदों का वास्तविक और शुद्ध स्वरूप दूषित हो गया है। जब तक वेदों का प्राचीन शुद्ध स्वरूप प्रकट नहीं होगा, तब तक आर्य जाति का उत्थान और कल्याण होना सम्भव नहीं है, अतः उन्हें आर्य जाति, वैदिक शिक्षा एवं आचार – विचार के पुनरूत्थान के लिए प्राचीन आर्ष पद्धति के अनुसार वेदों का भाष्य करने की आवश्यकता महसूस हुई थी।

प्रश्न 2 महर्षि ने वेदभाष्य करने का संकल्प और आरम्भ कब किया ?

उत्तर : महर्षि ने वेदभाष्य करने का संकल्प संवत् 1929 के अन्त या संवत् 1930 के आदि में किया और उसके लिए प्रयत्न तभी से आरम्भ कर दिया।

प्रश्न 3 क्या महर्षि ने सीधा ही वेद भाष्य लिखना प्रारम्भ कर दिया था ? अथवा इसकी तैयारी के रूप में कुछ और भी प्रकाशित किया था ?

उत्तर : वेदभाष्य लिखने से पूर्व महर्षि ने उसका स्वरूप जनता में प्रकट करने के लिए दो बार वेदभाष्य के नमूने प्रकाशित करवाये थे।

thearyasamaj.org

प्रश्न 4 इन नमूनों में कितने मन्त्रों का भाष्य था ?

उत्तर : पहले नमूने में ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र (ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितम्) अथवा प्रथम पूरे सूक्त का भाष्य प्रकाशित किया गया था। पहले मन्त्र के दो प्रकार के अर्थ किये थे – भौतिक और पारमार्थिक। महर्षि ने इसकी भूमिका में लिखा था कि सारे वेदों का इसी शैली में अनुवाद करूँगा। श्री पं. देवेन्द्रनाथजी के अनुसार, इस नमूने में ऋग्वेद के प्रथम पूरे सूक्त का भाष्य था, जबकि पं. लेखराम जी के अनुसार केवल प्रथम मन्त्र का भाष्य था, जबकि पं. लेखराम जी के अनुसार केवल प्रथम मन्त्र का भाष्य था। प्रमाणों के अनुसार पं. देवेन्द्रनाथ जी की बात सत्य सिद्ध होती है।

दूसरे नमूने में ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त और द्वितीय सूक्त के प्रथम मन्त्र के संस्कृत भाष्य का कुछ अंश छपा था। इसमें प्रत्येक मन्त्र के दोनों प्रकार के (भौतिक और पारमार्थिक) अर्थ दर्शाये गये थे।

प्रश्न 5 वेद भाष्य के इन नमूनों की क्या आवश्यकता थी ?

उत्तर : ऋषि दयानन्द का काल वैदिक ग्रंथों की दृष्टि से एकदम प्रतिकूल था। सायण, महीधर, उब्बट आदि के गलत भाष्यों से वेदों के विषयों में अनेक भ्रान्तियाँ फैल चुकी थी। उसकी गलत दिशा को मोड़कर आर्ष पद्धति के अनुसार अर्थ करना अत्यधिक साहस का काम था। इस कार्य के लिए केवल जनता से सहायता मिलने की आशा थी। अतः वेदभाष्य के इस भावी स्वरूप को नमूने के तौर पर प्रस्तुत करके महर्षि लोगों के अनुकूल और प्रतिकूल दृष्टिकोण को जानना चाहते थे। आपत्ति करने वालों की शंकाओं का समाधान करके निर्विघ्न रूप से इस कार्य को आगे बढ़ाना चाहते थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने प्रथम नमूना काशी के पण्डित बाल शास्त्री व स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती को तथा कलकत्ता के एवं अन्य स्थानीय पण्डितों को भी भेजा था।

प्रश्न 6 क्या किसी ने इसका विरोध किया था ?

उत्तर : स्वामी विशुद्धानन्द आदि उपर्युक्त पण्डितों ने तो विरोध नहीं किया था, परन्तु द्वितीय नमूने पर कलकत्ता संस्कृत कॉलेज के स्थानापन्न प्रिंसीपल श्री पं. महेशचन्द्र न्यायरत्न और पं. गोविन्दराय ने आक्षेप किये और इस विषयक पुस्तकें भी छपवाई थीं। पं. शिवनारायण अग्निहोत्री ने भी इसके खण्डन में **दयानन्द सरस्वती के वेदभाष्य रिव्यू** नामक पुस्तक छपवाई थी और **रिसाले हिन्द** में भी कुछ लेख छपवाये थे।

प्रश्न 7 क्या महर्षि ने इन सब आक्षेपों का उत्तर दिया था ?

उत्तर : हाँ, महर्षि ने इन सब आक्षेपों का उत्तर भ्रान्ति निवारण नामक पुस्तक में दिया था।

प्रश्न 8 वेदभाष्य के ये दोनों नमूने कब छापे गये थे ?

उत्तर : वेदभाष्य के ये दोनों नमूने क्रमशः कार्तिक सं. 1931 में तथा संवत् 1939 में छापे गये थे।

thearyasamaj.org

धर्म को क्यों माने

धर्म के मर्म को न समझने के कारण समाज इसे सामान्य रूप में ले रहा है। इसे एच्छिक विषय मान रखा है। किन्तु ऐसा नहीं है, धर्म ही समस्त संसार का आधार है मानवता की पहचान, जीवन सुगंध और सबकुछ धर्म है। सामाजिक दुर्गति का कारण ही यह है कि हम धर्म पथ से भटक गए, धर्म के महत्व को समझ ही नहीं पाए। इस लेख की श्रृंखला में धर्म से संबधित अनेक तथ्यों पर विचार करेगें। धर्म के बिना हम कहां है, देखिए हमारे विद्वानों ने ऋषियों ने हमें क्या सन्देश दिया है। उनके अनुसार धर्म ही मानव जीवन की सार्थकता है। धर्म बिना मानवीय जीवन पशुवत है।

आहारनिन्द्रा भय मैथुनं च
सामान्य मेतद् पशु भिर्नराणाम्
धर्मो ही तेषामधिको विशेषो
धर्मेण हीना पशुभिर्समाना ।। चाणक्य

खाना, पीना, भय, परिवार वृद्धि यह सब मनुष्यों और पशुओं में भी समान रूप से पायी जाती है। किन्तु धर्म ही दोनों के मध्य का अन्तर है बिना धर्माचरण के मनु य पशु समान है।

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भूविभार भूता – मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।। भर्तृहरि

जिसके जीवन में न विद्या है न तप और न दान है जो ज्ञान व शीलता के गुणों से रिक्त है जिसका जीवन धर्मानुसार नहीं है। वह तो पृथ्वी पर भार है मनुष्य के रूप में भी पशु ही है।

पुलकाइव धान्येषु पुत्तिका इव पक्षिषु
तद्विधास्ते मनुष्याणां येष धर्मो न कारणम्।

जिस प्रकार धान के छिलके व्यर्थ होने से फेंक दिए जाते है कीड़े मकोडे मगर मंच्छ का कोई औचित्य नहीं रहता। उसी प्रकार धर्म बिना मानव मनु य का मोल नहीं वह भी व्यर्थ है।

इसलिए धर्म का पालन करना सब मनुष्यों के लिए अवश्यपालनीय कर्तव्य है क्योकि धर्म ही हमारा रक्षक है, धर्म से ही मानवता सुरक्षित है।

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतोऽवधीत ।। मनु

अर्थ – धर्म की रक्षा करने पर धर्म हमारी रक्षा करता है और जो धर्म का हनन करता है वह धर्म के द्वारा ही मारा जाता है। कहीं मारा हुआ धर्म हमें भी

thearyasamaj.org

न मार दे, इसलिए आवश्यक रूप से धर्म का पालन करना चाहिए। बिना धर्माचरण के आचरण वाले मनुष्य का पतन होता है –

धर्म मर्थ परित्यज्य काम वस्तु निशेवते।
स वृक्षाग्रे यथा सुप्त पतित एव प्रबुध्यते।। महाभारत

धमार्थ का त्याग कर केवल भोग विलास में रहने वाले व्यक्ति की स्थिति वैसी होती है जैसे कोई व्यक्ति वृक्ष की टहनी के अग्र भाग पर बैठ कर सो जावे तो उसका गिरना निशिचित है। अर्थात धर्म से दूरी मानव पतन का कारण बन जाती है।

संध्या करते समय प्रार्थना में हमको ईश्वर से जो चाहते हैं उसमें **धर्म** सबसे पहले है फिर **अर्थ, काम और मोक्ष** की इच्छा व्यक्त की है।

इस प्रकार धर्म प्रत्येक मानव के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व अवश्य पालनीय कर्म है, मानव जीवन की सार्थकता इसी से है। इसलिए हमारा जीवन अपने सम्पूर्ण कर्तव्यों को पालन करते हुए धर्मयुक्त होना चाहिए।

कमशः ....

यह लेख 3–4 अंकों में प्रकाशित होगा, पूरा पढ़ेगें तो धर्म के संबंध में कुछ तथ्य पढ़ने में आवेगें। धर्म से क्या लाभ हैं, आगामी लेख में पढ़िये।

– प्रकाश आर्य

विदुर नीति –

(महाभारत उद्योग पर्व से)

दुःशासन स्मूपहतोभिऽशस्तो नावर्तते मन्यु वशात् कृतघ्नः।
न कस्यचिन्मित्रमथो दुरात्मा कलाश्चैता अधमस्येह पुंसः।।

(अध्याय–4, श्लोक–18)

जिसका शासन अत्यन्त कठोर हो, जो अनेक दोषों से दूषित हो, कलंकित हो, जो क्रोधवश किसी की बुराई करने से नहीं हटता हो, दूसरों के किए हुए उपकार को नहीं मानता हो। जिसकी किसी के साथ मित्रता नहीं हो तथा जो दुरात्मा हो – ये अधम पुरूष के भेद हैं।

भर्तृहरि शतक –

मान शौर्य प्रशंसा

राजन् ! दुधुक्षति यदि क्षिति धेनुमेतां, तेनाद्यं वत्समिव लोक ममुम्मुषाण।
तस्मिश्च सम्यगनिशं परिपुण्यमाणे। नाना फलं फलति कल्पलतेव भूमिः।।

(श्लोक–46)

भावार्थ – हे राजन्। यदि आप इस पृथ्वी रूपी गाय को दुहना चाहते हैं, तो अपनी प्रजा का पालन उसके बछड़े के समान करो। कारण, भली प्रकार पालन की गई पृथ्वी कल्पवृक्ष के समान फलदायी होती है।

thearyasamaj.org

अनुकरणीय चरित्र

बन्दी छोड़

जहांगीर ने सिखों के छठे गुरू हरगोविन्द जी को ग्वालियर के किले में कैद कर दिया था। गुरू हरगोविन्द ही थे जिन्होंने सर्वप्रथम सिखों को शस्त्र धारण कराये थे। गुरू जी की मान्यता थी कि सबल शरीर में ही सबल मन का वास होता है। वे सबको ब्रह्म तेज तथा क्षत्रतेज के पुजारी बनाना चाहते थे।

सिख शस्त्र धारण करने लगे। इस संबंध में दीवान चन्दूलाल ने बादशाह से शिकायत की। परिणाम यह हुआ कि गुरू जी को पकड़ लिया गया और ग्वालियर के किले में बन्दी बना लिया गया।

लाहौर के प्रसिद्ध फकीर मियां मीर ने जहांगीर के पास सन्देश भेजा, तुमने दुष्ट दीवान की शिकायत पर खुदापरस्त सन्त हरगोविन्द जी को कैद में रखकर अच्छा नहीं किया। उन्हें तुरन्त छोड़ दो। ऐसा न करने से तुम पर तथा तुम्हारे राज्य पर खुदा की मार हो सकती है।

फकीर की चेतावनी का प्रभाव हुआ। जहांगीर ने हरगोविन्द जी को मुक्त कर देने का आदेश दे दिया। पर गुरूजी ने कारागार से बाहर आने से इन्कार कर दिया।

साहसी बालक जार्ज वाशिंगटन

प्रातःकाल का समय था। एक स्त्री रो रही थी। उसका बच्चा पास की नदी में डूब गया था। उसका करूण स्वर सुन कई लोग एकत्रित हो गये। नदी में कूदने का साहस कोई भी नहीं कर रहा था।

इतने में एक 14 वर्ष का बालक दौड़ता हुआ आया और नदी में कूद पड़ा। पानी के तेज बहाव में पर्याप्त संघर्ष के पश्चात वह बालक उस छोटे बच्चे को अपनी पीठ पर उठाये किनारे पर आ गया।

महिला ने उस बालक को शुभाशीष दी और वहां खड़े लोग उसके साहस की प्रशंसा करने लगे।

यह परोपकारी बालक बड़ा होकर अमेरिका का राष्ट्रपति बना, नाम था – जार्ज वाशिंगटन।

बालक गोपाल कृष्ण गोखले की सत्यप्रियता

आचार्य जी ने बच्चों को गृह कार्य दिया। गणित के प्रश्न हल करने को कहा गया। बालक गोपाल ने एक को छोड़कर अन्य प्रश्न हल कर लिये, परन्तु वह एक प्रश्न को ठीक से नहीं कर पा रहा था। उसने अपने मित्र की सहायता से वह प्रश्न भी हल कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिख दिया।

दूसरे दिन जब आचार्य जी ने प्रश्न देखे तो गोपाल के सारे प्रश्न ठीक थे। बालक की प्रशंसा की गयी और आचार्य जी ने उसकी पीठ थपथपायी। बालक की ऑखों में ऑसू आ गये और वह रोने लगा। पूछने पर उसने सारी बात सत्य–सत्य बता दी। आचार्य बालक गोपाल की सत्यप्रियता से बहुत ही प्रसन्न हुए।

आचार्य ने गोपाल को उसकी प्रामाणिकता के लिए पारितोषिक दिया। आगे चलकर यही महान देशभक्त गोपालकृष्ण गोखले बने जो महात्मा गांधी के राजनीतिक गुरू थे।

thearyasamaj.org

महर्षि का कलकत्ता प्रवास

स्वामीजी डुमरांव, आरा, पटना मुंगेर, और भागलपुर होते हुए 16 दिसम्बर 1872 को कलकत्ता पहुंचे। स्वामी को कलकत्ता लाने के लिए बैरिस्टर चन्द्रशेखर ने विशेष प्रयत्न किया था स्वामीजी को राजा सौरेन्द्र मोहन के प्रमोद कानन में ठहराया गया और यहां स्वामीजी के उपदेश होने लगे।

स्वामीजी जब कलकत्ता पहुंचे तब कैशव बाबूबहार गए हुए थे जब वापस आए तो स्वामी के पधारने का समाचार मिला जब मिले तो बिना परिचय दिए काफी देर तक वार्तालाप करते रहे। बाद में परिचय हो गया तथा दोनों में बड़ी घनि ठता भी हो गई इनके साथ बंगाल के समकालीन प्रबुद्ध और प्रगतिशील समाज का न केवल नेतृत्व करते थे प्रयुक्त उस प्रदेश की प्रतिभा और पाण्डित्य का प्रतिनिधित्व भी करते थे।

कलकत्ता प्रवास की सूचना सारे शहर में फैल गई पंडित हेमचन्द्र चक्रवर्ती ब्रह्य समाजी विद्वान थे उन्होने स्वामीजी से प्रश्न किया कि आप जाति भेद स्वीकार करते है या नहीं। स्वामीजी बोले मनुष्य–पशु पक्षी जाति में भेद प्रसिद्ध है पर आप का आशय यदि चार वर्णो से है तो वर्ण जन्म भेद से नहीं है, वे गुण कर्म के भेद से है।

चक्रवर्ती जी बोले की ईश्वर निराकार है तो योग की सिद्धी की विधि बताइये। स्वामीजी ने अष्टांग योग की विधि और गायत्री मंत्र का अर्थ बताया उन दिनों केशव चन्द्र सेन यज्ञोपवित धारको में ब्रह्य समाजियों की निन्दा किया करते थे। स्वामीजी ने कहां कि आप शुभ गुण युक्त विद्वान ब्राह्यण वंशीय है। आप को यज्ञोपवित अवश्य धारण करना चाहिए।

इस समय बाईबिल कुरान और वेदो, के आधार पर सभी बड़े धर्म है सभी अपने को सच्चा कहते है पक्षपात और इतिहासादि दोषों से विवर्जित केवल वेद ही है अतः वैदिक धर्म ही सच्चा है।

इस पर केशव बाबू ने कहां कि इतना अप्रतिम विद्वान अंग्रेजी नहीं जानता है यह दुख है अन्यथा इग्लैण्ड जाते समय यह मेरे साथी होते उत्तर में स्वामी जी ने कहां कि ब्राह्य नेता संस्कृत नहीं जानता फिर लोगों को उपदेश अंग्रेजी में देता है। जिसे वे समझते नहीं।

एक दिन केशव बाबू ने कहां कि आप संस्कृत में ही बात करते है जिसे सब जानते नहीं और पंडित लोग कुछ और ही समझा देते है। अतः देव (हिन्दी) भाषा में ही भाषण आदि देने का यत्न करें। स्वामीजी ने निरभिमानी होकर यह प्रस्ताव मान लिया।

केशव बाबू ने एक बात कही आप सभा आदि में जाते है अतः वस्त्रादि धारण कर लिया करे तो अच्छा है, क्योकि नंगे बदन औरतो में जाना निषिद्ध है आप पर कोई आपत्ती नहीं करेगा आप वस्त्र धारण कर ले तो अच्छा है। महाराज ने इसको भी स्वीकार किया।

thearyasamaj.org

केशव बाबू ने स्वामीजी व्याख्यान अपनी कोठी पर कराना निश्चित किया जिसमे सभी गणमान्य सज्जन आने लगे और युक्तियों प्रमाणों तर्को से सभी श्रोतागण प्रसन्न हो गये मान्य विद्वानों में ईश्वर चन्द विद्यासागर, संस्कृत कालिज के प्रिन्सिपल महेश चरण जी न्यायरत्न और राजनारायण वसु आदि थे।

प्राच्य विद्या मनीषियों द्वारा स्थापित रायल एशियाटिक सोसाइटी में भी स्वामीजी गए वहां पूर्व तथा पश्चिम के विद्वानों से भी भेट की स्वामीजी ने कुछ पुस्तके भी खरीदी। कलकत्ता के धर्म तत्व नामक समाचार पत्र ने स्वामीजी के कलकत्ता पधारने और वहां किए गए प्रचार के बारे में चैत्र 1 सम्वत् 1784 को लिखा था कि सुप्रसिद्ध स्वामी दयानंद सरस्वती कलकत्ता में है। वे आर्ष ग्रन्थो के प्रकांड पंडित है वे मूर्तिपूजा के घोर विरोधी है और अद्वैतवाद का खण्डन करते है उनका एक मात्र निराकार परमेश्वर में विश्वास है उनकी केवल ईश्वरीय ज्ञान वेद में आस्था है वह विधवा विवाह का समर्थन और बाल विवाह का खण्डन करते है वह जन्म से जातपात को नहीं मानते गुण कर्म अनुसार वर्ण व्यवस्था के पक्षवाती है। पुनर्जन्म में भी उनकी आस्था है।

वह बड़े विद्वान सभ्य और चरित्रवान है संस्कृत उनकी मात्र भाषा बन गई है उनके साथ वार्तालाप करने पर लोग सन्तुष्ट होकर लौटते है। रविन्द्रनाथ ठाकुर के पिता महर्षि देवेन्द्र नाथ जी ने स्वामी दयानंद जी महाराज को अपने निवास स्थान पर ठहराने की, प्रार्थना की जिसे स्वामीजी ने यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि उनका नियम किसी गृहस्थी के घर पर ठहरने का नहीं है।

महर्षि के चरणों में कोटि–कोटि नमन

ज्योति थी जिसने जलाई ज्ञान की,
दी दिशा विधि और वेद विधान की।
कर दिये झंकृत नये स्वर कान्ति के
तोड़ डाले बन्ध सारे भ्रान्ति के।
कर अन्धेरा दूर सब अज्ञान का,
भर दिया घर–घर उजाला ज्ञान का।
खण्ड–खण्ड किया सदा पाखंड को,
और ऊँचा धर्म ध्वज के दण्ड को।
तोड़ भ्रम को, ज्ञान की दुंदुभि बजा,
सत्य की फहराई थी जिसने ध्वजा।
उस मनस्वी को नमन मेरा।
उस तपस्वी को नमन मेरा।
उस यशस्वी को नम मेरा।

– उमाशंकर वर्मा 'साहित्य' कन्नौज

thearyasamaj.org

उज्जैन संभाग में कार्यशाला सम्पन्न

शाजापुर, कानड़, टिगरिया, चौमा, आगर, मोहन बड़ोदिया, करजू, बोरखेड़ी, आदि ग्रामीण क्षेत्र की कार्यशाला उज्जैन संभाग के ग्राम कानड़ में लगभग 90 आर्यजनों की उपस्थिति में दिनांक 3/4/2015 को सम्पन्न हुई। कार्यशाला में 70 से अधिक कनवयुवक कार्यकर्ता सम्मीलित हुए थे। निरन्तर 2 घन्टे 10 मिनिट तक सभा मन्त्री श्री प्रकाश आर्य द्वारा बहुत प्रभावी तथा मार्मिक उदबोधन दिया गया। संगठन की वृद्धि कैसे करें। संत्सग को रूची कर बनावे, सामान्य जन से व्यवहार करे, उपदेशकों से प्रचार किस प्रकार करवाना आदि बातों पर प्रकाश डाला।

इस प्रकार की कार्यशाला पहली बार देखी। इसका बहुत प्रभाव हुआ एवं जाग्रती कार्यकर्ताओं में आयी है। इस अवसर पर 10 व्यक्तियों ने वेदों का पूरा सेट खरीदने हेतु नाम लिखवाये।

सभा की ओर से 10 सेट उन्हे उचित मूल्य पर भेजे जावेगें। कार्यकर्ताओं ने इसी प्रकार की कार्यशाला पुनः 3 माह में आयोजित करने का निवेदन किया। कार्यक्रम में श्री वेदप्रकाश आर्य उज्जैन, श्री शिवसिंह आर्य, श्री काशीरामजी अनल, श्री भगतसिंह आर्य श्री हरीसिंह आर्य, श्री जगदीश आर्य, श्री रघुनाथसिंह आर्य आदि प्रमुख व्यक्ति भी उपस्थित थे।

श्री दरबारसिंह आर्य
उपमंत्री उज्जैन संभाग

शोक समाचार

आर्य समाज मल्हारगंज के प्रधान इन्दौर संभाग के उपमंत्री श्री दक्षदेव गौड़ के पिता पं. अमरचन्द जी शास्त्री वैद्य फरीदाबाद का निधन हो गया।

पंडित जी आर्य समाज और वैदिक धर्म के कर्मठ समर्थक, कार्यकर्ता, प्रचारक और संस्कार प्रशीक्षक थे। आपके द्वारा अनेक व्यक्ति वैदिक धर्म के समर्थक व कार्यकर्ता बने पूरे क्षेत्र में आपकी बड़ी ख्याती थी। अंत्येष्ठी पूर्ण वैदिक विधी अनुसार सम्पन्न हुई। इस अवसर पर बड़ी संख्या में नगर व क्षेत्र के आर्य जन सम्मीलित हुए। ऐसे महान कर्मयोगी के निधन पर प्रान्तीय सभा की विनम्र श्रद्धान्जली अर्पित है।

श्री प्रकाश आर्य
सभा मंत्री

श्री इन्द्रप्रकाश गान्धी
सभा प्रधान

एवं समस्त सदस्य मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल

thearyasamaj.org

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की श्रृंखला में अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन आस्ट्रेलिया–सिडनी दिनांक 27, 28 एवं 29 नवम्बर 2015 को आयोजित

कार्यक्रम में भाग लेने हेतु इच्छुक व्यक्ति अभी से अपने नामांकन हेतु सम्पर्क करें, ताकि आगे की व्यवस्था में सुविधा हो।

भवदीय –

आर्य सुरेशचन्द्र अग्रवाल	प्रकाश आर्य	विनय आर्य	वाचोनिधि आर्य
मो. 9824072509	9826655117	9958174441	9428006232

प्रान्तीय सभा के विद्वानों द्वारा सामुहिक विवाह सम्पन्न

नर्मदा तट पर निर्धन बेटी विवाह समिति द्वारा आयोजित सामुहिक विवाह सम्मेलन प्रान्तीय सभा के उपदेशक श्री सुरेशचन्द शास्त्री के द्वारा 11 जोडो का संस्कार वैदिक पद्धति से करवाया गया।

कार्यक्रम में लगभग 3000 हजार स्त्री, पुरूष वहां उपस्थित थे। कार्यक्रम के सम्बन्ध में सर्वत्र हर्ष व्याप्त था जन समूह बहुत प्रभावित हुआ। अन्य कई व्यक्तियों ने ऐसी पद्धति से संस्कार करवाने का आग्रह किया।

प्रेस मीडिया पत्रकार भी उपस्थित थे। संस्कार के सहयोगी नव प्रशीक्षित 8 पुरोहित भी उपस्थित थे। श्री रघुराम आर्य, श्री महेश आर्य के सुप्रयास से यह कार्यकम वैदिक पद्धति से सम्पन्न हुआ।

दयानन्दगंज में विकय केन्द्र प्रारंभ

आर्य समाज दयानन्दगंज इन्दौर में साहित्य एवं स्वनिर्मित शुद्ध सुगंधित हवन सामग्री विकय हेतु विकय केन्द्र प्रारंभ हो चुका है। विकय पर विशेष छूट प्रदान की जा रही है।

श्री दिनेश गुप्ता
संयोजक तदर्थ समिति दयानंदगंज इन्दौर

thearyasamaj.org

आर्य समाजों में पुरोहितों की नियुक्ति

आर्य समाजों में पुरोहित का न होना अनेक समस्याओं और कर्म काण्डों को करवाने में अव्यवस्था का कारण है। प्रशीक्षित व्यक्ति के स्थान पर अनजान, अशुद्ध मन्त्र बोलने वाले, संस्कारों की पूर्ण व विधिवत जानकारी न रखने वाले व्यक्ति जब संस्कार कराते हैं तो वह संस्कार नि प्रभावी, होता है व लाभकारी भी नहीं होता।

प्रशिक्षित पुरोहित समाजों में न होने के कारण मन्त्री, प्रधान या अन्य कोई सदस्य वहां के पुरोहित बन जाते हैं। कुछ समाजों में तो इसे अपना व्यवसाय ही बना लिया जाता है। उस समाज के ऐसे अधिकारी फिर किसी पुरोहित को अपनी समाज में आने ही नहीं देना चाहते।

ऐसी समाजे मात्र विवाह संस्कार केन्द्र बन कर रह जाती है, जो बदनामी का कारण बनती है। पुरोहित ही समाज की दैनिक गतिविधियां, साप्ताहिक संत्सग, और सदस्यों के संगठन को अच्छा अंजाम दे सकते है। इसी भावना से सभा के द्वारा 14 सेवाभावी मिशन के प्रति अच्छे भाव रखने वाले नवयुवकों को पुरोहित प्रशीक्षण दिया गया।

6 युवकों को 1 माह तक शुद्ध उच्चारण यज्ञ प्रकीया तथा सैद्धान्तिक ज्ञान दिया गया। इसके पश्चात 14 नवयुवकों को संस्कार करवाने का प्रशीक्षण दिया गया। सभा द्वारा यह प्रशीक्षण महू एवं आर्य समाज इन्दौर दयानंद गंज इन्दौर में दिया गया।

प्रशिक्षित नवयुवकों में आर्य समाज उज्जैन, आर्य समाज मल्हारगंज, आर्य समाज राऊ, आर्य समाज संयोगितागंज, इन्दौर आर्य समाज बडवानी, आर्य समाज दयानंद गंज में नियुक्त है।

देवास, देपालपुर, कुआं, में शीघ्र नियुक्ति करना है। इन समाजों में माइक पर प्रतिदिन प्रातः यज्ञ प्रारंभ हो रहा है। अन्य सभी समाजों के लिए सभा द्वारा पुरोहित प्रशीक्षण व्यवस्था की जावेगी।

पुरोहित प्रशिक्षण – श्री सोमदेव जी शास्त्री, श्री रामलाल शास्त्री, एवं श्री सुरेश शास्त्री द्वारा दिया गया।

रतलाम संभाग की आर्य समाजों का दौरा

रतलाम संभाग के उपप्रधान श्री भगवानदास जी अग्रवाल, श्री बंसीलाल आर्य, एवं श्री उत्तमचन्द वर्मा जावरा द्वारा सभा के वाहन से आर्य समाजों का दौरा किया जाकर समाजों का निरिक्षण किया, उनका मार्गदर्शन किया। इसमें जावरा, आक्याकला, डेहरी, खेडाखदान, बालागुडा, नेनोरा, मंदसौर, पीपल्यामंडी, नारायणगढ़, बूढ़ा, टकरावद, वरखेडापथ समाजों का निरीक्षण किया।

thearyasamaj.org

स्वामी अग्निवेश का यासीन मलिक के साथ दिया वक्तव्य शर्मसार करने योग्य अग्निवेश आर्य समाज का प्रवक्ता नहीं – सारे देश एवं विदेश की आर्य समाजों में निन्दा प्रस्ताव

कश्मीर भारत का अभिन्न अंग : देश द्रोह सहन नहीं होगा – आर्य समाज

हाल ही में जम्मू कश्मीर के श्रीनगर में घटित घटना से कौन भारतीय परिचित नहीं होगा। आज यह तथ्य प्रत्येक भारतवासी के लिए विचारणीय है। एक व्यक्ति का इतना दुःसाहस की वह भारत भूमि पर पल बढ़ कर शत्रु मुल्क का गुणगान कर रहा है। जेल में अपने अपराधों की सजा पा रहे। एक राष्ट्र विरोधी नारेबाजी करना एक देशद्रोह अपराध है। स्वामी अग्निवेश जी ने यासीन मलिक के साथ मिलकर जो वक्तव्य दिया वह हम सबके लिए शर्मसार करने वाला है। किसी भी व्यक्ति अथवा भारतवासी के लिए यह क्षम्य नहीं है। ज्ञात हो कि अग्निवेश का आर्य समाज से कोई संबंध नहीं है और न ही वह आर्य समाज का प्रवक्ता ही है। इस संबंध में सार्वदेशिक सभा ने पहले भी प्रेस विज्ञप्तियां जारी की थी और अब पुनः जारी की जा रही है। जम्मू कश्मीर आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ–साथ हरियाणा, मध्य भारत, गुजरात, महाराष्ट्र आदि सभाओं के साथ–साथ सारे देश तथा विदेशों की आर्य समाजों ने स्वामी अग्निवेश के विरूद्ध निन्दा प्रस्ताव पारित किए हैं। सावेदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा भारत सरकार से अपील करती है कि ऐसे छद्म वेशी देशद्रोहियों पर सख्त कार्यवाही करते हुए कठोर दण्ड दिए जाए तभी भारत अखण्ड एवं सुरक्षित रह सकेगा।

उन्होंने कहा कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है, कश्मीर में जो हुआ वह देशद्रोह है, जिसे आर्य समाज कभी सहन नहीं करेगा। आर्य समाज का इस स्वतन्त्रता में बहुत बड़ा और बलिदानी योगदान है। जब 1990 में कश्मीरी हिन्दुओं को घाटी से जबरदस्ती निकाला जा रहा था, आखिर तब कहां थे "ये शान्ति के रहनुमा स्वामी"। दर–दर की ठोकरे खाकर जब ये हमारे भाई देश के विभिन्न भागों में खानाबदोश की जिन्दगी जी रहे हैं, क्या उनके पास भी आंसू बहाने और दो शब्द सहानुभूति के कहने के लिए कभी ये गए थे ? इनका जीवन स्वार्थ में लिप्त और राजनीति के आस पास घूमता रहा, सनातन संस्कृति के लिए न कभी कोई सोच था, न रहेगा क्योंकि उनकी मित्रता उससे अधिक है, जो देश व संस्कृति के विरोधी हैं।

प्रकाश आर्य

सभामन्त्री

thearyasamaj.org

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

अगली प्रकाशित होने वाली अन्य पुस्तकें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो-सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य
...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।
महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥
सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
आर्य समाज

thearyasamaj.org

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - प्रकाश आर्य, महू

AMIT # 98262-71062